35

पांच हज़ार को खिलाना

(14:13-21)

लोगों की भीड़ को खिलाने से यह पता चला कि यीशु के लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं था। उसके चेलों को चाहे इस तथ्य का पहले ही काफी प्रमाण मिल चुका था पर कई बार उन्हें अभी भी शक हो जाता था। जिसे वे न पार किए जा सकने वाली रुकावट के रूप में देख रहे थे, उसी को यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ और लोगों के लिए अपने स्वयं के प्रेम को दिखाने के अवसर के रूप में देखा।

यीशु का जाना (14:13, 14)

[13]जब यीशु ने यह सुना, तो वह नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह को एकान्त में चला गया। लोग यह सुनकर नगर-नगर से पैदल ही उसके पीछे हो लिए। [14]उस ने निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, और उनके बीमारों को चंगा किया।

आयत 13. यहां पर यूहन्ना की मृत्यु की झांकी से (14:3-12) यीशु की सेवकाई तक बदलाव होता है। इन आयतों का कालक्रमिक सम्बन्ध अस्पष्ट रहता है। NASB में आयत 13 का आरम्भ इस प्रकार होता है, **अब जब यीशु ने यूहन्ना के बारे में सुना**। यूनानी धर्मशास्त्र में, यूहन्ना के बारे में शब्द नहीं मिलते, परन्तु अनुवादकों द्वारा इन्हें जोड़ा गया है। यदि यह जोड़ा जाना सही है तो शेष अध्याय भी झांकी का भाग है। यूहन्ना का सिर हेरोदेस के यीशु के अनुमान से पहले काट दिया गया था (14:1, 2)। यीशु का अकेले में जाना यूहन्ना की मृत्यु की निराशाजनक खबर सुनने के सीधे जवाब में लगता है।

यह भी हो सकता है कि मत्ती ने यूहन्ना की मृत्यु के यीशु को पता चलने की बात हेरोदेस को मिली राहत के सम्बन्ध में की कि यूहन्ना जी उठा है (14:1, 2)। वचन की यह समझ झांकी को 14:3-12 तक सीमित कर देगी। यह इस बात की समझ भी देगी कि यीशु का अकेले में जाना उसके बारे में कही गई हेरोदेस की बात की प्रतिक्रिया थी। मरकुस 6 और लूका 9 में तुलना से संकेत मिलता है कि कालक्रम की यह व्याख्या सही है। इसके अलावा मरकुस और लूका यीशु के एकांत में जाने का एक और कारण बारह चेलों का सीमित आज्ञा से वापस आना और विश्राम के लिए उनकी आवश्यकता बताते हैं (मरकुस 6:30, 31; लूका 9:10)।

पिछले अध्याय में यीशु अपने नगर नासरत में सेवकाई कर रहा था (13:54-58)। वह अपनी सेवा करने के लिए गलील की झील के किनारों पर लौट आया था। हेरोदेस का उसके बारे में विचार सुनने पर यीशु **नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह के, एकांत में**

चला गया।''एकांत में गया'' वाक्यांश चेलों को निकाल नहीं देता, जो उसके साथ थे (मरकुस 6:31, 32; लूका 9:10)।''सुनसान जगह'' यूनानी भाषा के वाक्यांश (*erēmon topon*) का अनुवाद है। यीशु किसी निर्जन स्थान पर जा रहा था पर यह ''जंगल'' नहीं था, जैसा कि वहां बहुत हरी-भरी घास के उल्लेख से संकेत मिलता है (14:19; मरकुस 6:39)।

लूका के अनुसार यीशु और उसके चेले बैतसैदा की ओर जाने वाली नाव में बैठ गए (लूका 9:10)। परन्तु मरकुस में आश्चर्यकर्म से खिलाने *के बाद* यीशु ने अपने चेलों को ''उस पार बैतसैदा'' को भेजा (मरकुस 6:45)। शायद यीशु के समय में उस नाम से जिसका अर्थ ''मछली पकड़ने का घर'' या ''मछेरे का घर'' है, एक से अधिक नगर थे। लूका में बताया गया कि बैतसैदा झील के उत्तर पूर्व में था, जबकि मरकुस द्वारा बताया गया कफ़रनहूम निकट उत्तर पश्चिम में होगा (यूहन्ना 6:17)। जोसेफस ने बैतसैदा (जूलियास को) उत्तरी किनारे के साथ बताया, जो झील में यरदन के प्रवेश करने के पूर्व में है।[1]

इस इलाके वाले बैतसैदा का प्रबन्ध चौथाई के हाकिम फिलिप्पुस द्वारा होता था और उसे हेरोदेस से कुछ छूट मिली होगी।[2] यीशु ने चाहे जान-बूझकर अपने आपको खतरे से निकाला हो, परन्तु उस ने ऐसा किसी डर के कारण नहीं किया। अध्याय के अन्त तक वह गलील के गन्नेसरत में लौट आया था (14:34) जो हेरोदेस के अधीन था।

यह जानते हुए कि वह अपने मिशन को सही समय पर पूरा करेगा, यीशु को अच्छी तरह से सब कुछ पता था। एक और अवसर पर कुछ फरीसियों द्वारा यीशु को बताया गया कि हेरोदेस उसे मरवाना चाहता है (लूका 13:31)। उस ने राजा के पास यह कहते हुए संदेश भेजा, ''जाकर उस लोमड़ी से कह दो कि देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन पूरा करूंगा'' (लूका 13:32)। यह उस की आने वाली मृत्यु की स्पष्ट भविष्यवाणी थी, जो यरूशलेम में होने वाली थी (लूका 13:33)।

लोग यह सोचकर कि यीशु नाव में झील पार कर रहा है, उत्तरी तट के साथ-साथ चलते हुए **नगर-नगर से पैदल ही उसके पीछे हो लिए**। वे उसके पीछे आए, ''क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों को दिखाता था, वे उसे देखते थे'' (यूहन्ना 6:2)। ये लोग यीशु तक पहुंचने के लिए कोई भी रुकावट पार करने को तैयार थे।

आयत 14. नाव किनारे पर लग जाने के बाद यीशु ने **निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी**। कम से कम कुछ लोग जो पैदल आए थे, उसके पहुंचने से पहले यहां पहुंच गए। प्रभु ने **भीड़ पर तरस खाया** (देखें 9:36; 15:32; 20:34)। उस का मन उनके लिए भर आया क्योंकि ''वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई रखवाला न हो'' (मरकुस 6:34)। अपनी सहानुभूति के कारण, उस ने **उनके बीमारों को चंगा किया**।

यीशु का भीड़ को खिलाना (14:15-21)

[15]जब सांझ हुई तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, ''यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है; लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें।'' [16]पर यीशु ने उनसे कहा, ''उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें

खाने को दो।'' [17]उन्होंने उससे कहा, ''यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।'' [18]उस ने कहा, ''उनको यहां मेरे पास ले आओ।'' [19]तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़-तोड़ कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को। [20]जब सब खाकर तृप्त हो गए, तो चेलों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। [21]और खाने वाले, स्त्रियों और बालकों को छोड़कर, पांच हजार पुरुषों के लगभग थे।

यीशु का एकमात्र आश्चर्यकर्म जो सुसमाचार के चारों विवरणों में है, वह पांच रोटियों और दो मछलियों के साथ उस का पांच हज़ार पुरुषों को खिलाना है (14:15-21; मरकुस 6:35-44; लूका 9:12-17; यूहन्ना 6:5-14)। यह सुसमाचार के लेखकों के लिए इसके महत्व का संकेत है। चार हज़ार को खिलाने की बात केवल मत्ती और मरकुस में है (15:32-39; मरकुस 8:1-9)।

मसीहा के युग के सम्बन्ध में यहूदियों की एक परम्परा में लोगों को आश्चर्यकर्म से रोटी खिलाने की उम्मीद की जाती थी।[3] रोटियों को बढ़ाकर यीशु ने दिखा दिया कि वह वही भविष्यवक्ता था, जिसकी बात मूसा ने की थी (व्यवस्थाविवरण 18:15, 18; यूहन्ना 6:14)। मूसा के समय में परमेश्वर ने अपने लोगों का स्वर्ग से रोटी अर्थात मन्ना के साथ जंगल में पेट भरा था (निर्गमन 16:1-36)।[4] यीशु ने न केवल खाने के लिए शारीरिक रोटी को बढ़ाया, बल्कि वह जीवन की आत्मिक रोटी के रूप में स्वर्ग से नीचे भी आ गया। यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु के संदेश में इसी विषय को बढ़ाया गया है (यूहन्ना 6:26-59)।

आरम्भिक कलीसिया की कला में रोटी और मछली आमतौर पर दिखाई जाती है। वे मसीही लोग यीशु के आश्चर्यकर्म में दिलचस्पी लेते थे, क्योंकि परमेश्वर ने जंगल में अपने लोगों को मन्ना खिलाया था और वे समय के अन्त में मसीहा से दावत की उम्मीद कर रहे थे (देखें प्रकाशितवाक्य 2:17)।[5]

आयत 15. अपनी पहले बनाई योजना के अनुसार अपने चेलों के साथ विश्राम करने के बजाय यीशु ने बीमारों को चंगा करने और लोगों को सिखाने में दिन बिताया (14:14; मरकुस 6:34)। **जब सांझ हुई** तो **चेलों ने** चाहा कि वह लोगों को विदा कर दे। वह **जगह** जहां वे इकट्ठा हुए थे, **सुनसान** थी अर्थात निर्जन थी (14:13 पर टिप्पणियां देखें)। इसके अलावा शाम के खाने के लिए **देर** हो रही थी। **अपने लिए भोजन मोल** लेने के लिए **लोगों को** बिखरकर अलग-अलग **बस्तियों** में जाना पड़ना था। लोगों के लिए चेलों की चिन्ता वाजिब लगती है। लोग यीशु के पीछे बिना योजना बनाए आए थे और अपने साथ अधिक खाना नहीं लाए थे। अब तक उन्हें भूख लग चुकी होगी। बेशक चेलों को भी भूख लगी हुई थी।

आयत 16. चेले कितने स्तब्ध रह गए होंगे, जब यीशु ने उनसे कहा, **''उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।''** यूहन्ना रचित सुसमाचार के अनुसार, यीशु ने फिलिप्पुस से पूछा, ''हम इनके भोजन के लिए कहां से रोटी लाएं?'' (यूहन्ना 6:5)। इसके साथ एक व्याख्यात्मक टिप्पणी जोड़ी गई है कि ''उस ने यह बात उसे परखने के लिए कही,

क्योंकि वह आप जानता था कि वह क्या करेगा'' (यूहन्ना 6:6)। फिलिप्पुस ने भीड़ में लोगों की गिनती का अनुमान लगाया होगा और निष्कर्ष निकाला होगा कि उनके पास इतने लोगों को भरपेट खाना खिलाने के लिए पैसे नहीं हैं (यूहन्ना 6:7)। मरकुस 6:37 के अनुसार, चेलों ने यीशु से कहा, ''क्या हम दो सौ दीनार की रोटियां मोल लें ... ?'' एक दीनार एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी था (20:2), इसलिए दो सौ दीनार वर्ष के लगभग दो तिहाई भाग के लिए एक मज़दूर की मज़दूरी के बराबर था।

फिलिप्पुस की चिन्ता सही हो सकती है और उस की बात समझी जा सकती है, परन्तु यीशु में उसके विश्वास की कमी का कोई बहाना नहीं था। यीशु के लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं था। उसके चेले चाहे इस तथ्य का पर्याप्त सबूत पहले देख चुके थे पर अभी भी उन्हें संदेह था। उन्होंने जिस बात को दुर्गम रुकावट के रूप में देखा यीशु ने उसी को परमेश्वर की सामर्थ और लोगों के लिए अपने प्रेम को दिखाने के अवसर के रूप में देखा।

आयतें 17, 18. यीशु ने प्रेरितों से पूछा, ''जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं ?'' (मरकुस 6:38)। **उन्होंने उससे** कहा कि उन्हें **पांच रोटी और दो मछलियां** मिली हैं। यीशु ने उत्तर दिया, ''**उनको यहां मेरे पास ले आओ**।'' ''शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास'' यीशु के पास उस लड़के को ले आया, जिसके पास ''पांच रोटी और दो मछलियां'' थीं। परन्तु यह कहते हुए कि ''इतने लोगों के लिए यह क्या हैं ?'' उस ने भी फिलिप्पुस के साथ संदेह किया (यूहन्ना 6:8, 9)।

रोटी और मछली गलील के निर्धन लोगों का आम भोजन थी (7:9, 10); ये चीज़ें नाश्ते में भी खाई जाती थीं (यूहन्ना 21:9-13)। इस केस में लड़के की रोटी जौ से बनी हुई थी (यूहन्ना 6:9)। जौ गेहूं से पहले बसन्त ऋतु में काटा जाता था (रूत 2:23)। यह घटिया किस्म का अनाज था, जो गेहूं से सस्ता था (प्रकाशितवाक्य 6:6) और इस कारण अधिकतर बहुत निर्धन लोगों द्वारा खाया जाता था। ''रोटियां'' रोटी के गोल छोटे-छोटे टुकड़े होंगे। मछलियां सम्भवतया गलील की झील में पकड़ी गईं छोटी किस्म की होंगी। सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में ''मछली'' (*ichthus*) के लिए सामान्य शब्द इस्तेमाल किया गया है, जबकि यूहन्ना में छोटा सा शब्द *opsarion* है। मछलियां आम तौर पर खराब होने से बचाने के लिए नमक लगी होती थीं।

यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म से कोई पकी हुई पसंदीदा डिश, कोई विशेष फल, और कोई दाखरस नहीं थे। उसके द्वारा दिया गया भोजन परमेश्वर के उपाय पर ज़ोर देता है, जो निराशा की परिस्थतियों में केवल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए माना जा सकता है (देखें 6:25-34)। इस घटना में यह संदेश है कि यीशु अर्थात मसीहा, अपने चेलों के लिए जंगल में भी खाना उपलब्ध कराता है।[6]

आयत 19. यीशु ने **लोगों को घास पर बैठने** को कहा। यह संगठनात्मक कार्य उसके चेलों के माध्यम से किया गया (लूका 9:14, 15)। ''बैठने'' (*anaklinō*) का और अक्षरश: अनुवाद खाने के लिए बैठने के रूप में ''झुकना'' हो सकता है (8:11)। घास हरी थी (मरकुस 6:39) जो यह संकेत देता है कि मौसम बसन्त का था। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि फसह निकट था (यूहन्ना 6:4)। लोग ''सौ-सौ और पचास-पचास करके पांति-पांति बैठ गए''

(मरकुस 6:40)। ''पांति पांति'' के लिए मरकुस में इस्तेमाल किया गया वाक्यांश (*prasiai prasiai*) अक्षरश: ''टोलियां बनाकर'' है, जो सुझाव देता है कि सौ-सौ और पचास-पचास की टोलियों को हरी घास के विपरीत बाग के व्यवस्थित प्लॉटों की शृंखला की तरह बिठाया गया था।

लोगों के घास पर बैठ जाने के बाद यीशु ने भोजन के मेज़बान का काम किया। लोगों को देखते हुए **उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को** अपने हाथ में **लिया**। फिर **स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया**। स्वर्ग की ओर देखना यहूदियों में प्रार्थना की एक आम मुद्रा थी (भजन संहिता 121:1; 123:1, 2; 141:8; लूका 18:13; यूहन्ना 11:41; 17:1)। ''धन्यवाद किया'' का अर्थ केवल इतना है कि यीशु ने इसके लिए परमेश्वर को ''धन्यवाद दिया'' (NIV)। उस ने इसकी सामग्री को नहीं बदला, बल्कि केवल उसे बढ़ाया। रोटी के लिए परम्परागत यहूदी आशीष इस प्रकार थी: ''हे प्रभु हमारे परमेश्वर, संसार के राजा, तू धन्य है, जो भूमि से रोटी निकालता है।''[7]

रोटियां तोड़ते और मछलियों को बांटते हुए (मरकुस 6:41), यीशु ने उन्हें चेलों को दिया और चेलों ने उन्हें लोगों को दिया। घटना का सम्बन्ध इस रूप में एक चौंकाने वाली संक्षिप्तता है। रोटियों और मछलियों के बढ़ने के वर्णन के लिए कुछ ही शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। विलियम हैंड्रिक्सन ने टिप्पणी की है कि ''कोई यहां तक कह सकता है कि आश्चर्यकर्म व्याख्या होने के बजाय संकेत है।''[8]

बेशक एक बहुत ही अलग संदर्भ में, भाषा (''लिया,'' ''धन्यवाद किया,'' ''तोड़ा'' और ''दिया'') प्रभु भोज के संस्थान की बातों से मिलती-जुलती है (26:26; मरकुस 14:22; लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:23, 24)। यीशु के काम हमें प्रतिदिन किसी यहूदी परिवार के पिता द्वारा किए जाने वाले कामों का स्मरण कराते हैं। वह रोटी को लेता, भोजन के दान के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता, रोटी तोड़ता और उपस्थित लोगों में से प्रत्येक को खाने के लिए एक-एक ग्राही दे देता।[9]

आयत 20. सब खाकर तृप्त हो गए। न केवल उन्हें पेट भर खाने को दिया गया, बल्कि वे तृप्त हो गए थे। प्राचीन भूमध्य संसार में यह आम मान्यता थी कि अच्छा मेज़बान इतना भोजन देगा ताकि उसके मेहमान न केवल भर पेट खाएं, बल्कि खाना बचा भी रहेगा।[10] यूहन्ना 6:12 इसमें जोड़ देता है कि ''जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलों से कहा, 'बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फैंका न जाए।' '' **तो चेलों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं**।

''टोकरियां'' के लिए यहां इस्तेमाल शब्द (*kophinos*) चार हज़ार पुरुषों को खिलाने के विवरण में इस्तेमाल किए गए शब्द से अलग है (15:37)। यहां लगाया गया शब्द छोटी टोकरी का सुझाव देता है, जिसमें यहूदी व्यक्ति बाहर जाने के समय अन्यजातियों से भोजन खरीदने से बचने के लिए सफ़र में रोटी साथ ले जाता था।[11] यीशु के चार हज़ार को खिलाने वाली कहानी में ''टोकरों'' के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द (*spuris*) किसी व्यक्ति को पकड़ने के लिए बड़े टोकरे का संकेत दे सकता है, जैसे वह टोकरा जिसमें पौलुस को दमिश्क की शहरपनाह से नीचे उतारा गया था (प्रेरितों 9:25)। परन्तु लियोन मौरिस ने तर्क दिया है कि शब्दों में अन्तर टोकरों के आकार के बजाय उनके बीच के सामान में है। उस का निर्णय यह था कि *कोफ़िनोस*

बहुत कठोर, सम्भवतया बैंत जैसी, जबकि *स्पुरिस* सन या ऐसे सामान का बना होता था और अधिक लचीला होता था।[12]

''बारह'' हमें इस्राएल के बारह गोत्रों और बारह प्रेरितों का स्मरण कराता है। उनके सामने की भीड़ को नये इस्राएल को दर्शाने के रूप में देखा जा सकता है। जिस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में आश्चर्यकर्म के द्वारा भोजन खिलाया था, यीशु ने भी वैसे ही इस सुनसान जगह पर नये इस्राएल को खाना खिलाया। बचे हुए टुकड़े आश्चर्यकर्म के काफ़ी होने की पुष्टि करते हैं। इन बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा करने के लिए कहकर यीशु ने अपने चेलों को परमेश्वर की आशिषों को न गंवाने की शिक्षा दी (देखें लूका 15:13)।

आयत 21. उस दिन इकट्ठा हुऐ भीड़ का आकार बहुत बड़ा था। **खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर, पांच हज़ार पुरुषों के लगभग** थे। प्राचीन समयों में केवल पुरुषों की गिनती करना आम बात थी। गिनती में, बीस और इससे अधिक की उम्र के, अर्थात सेना में लड़ाई के योग्य लोगों को ही जनगणना में गिना जाता था (गिनती 1:2, 3)। यीशु ने पांच हज़ार पुरुषों को खिलाया था, जो कि एक रोमी सेना जितनी बड़ी थी। लोगों ने भूखों को खाना खिलाने और बीमारों को चंगा करने के उसके कामों की व्याख्या युद्ध में बड़ी सम्पत्ति के रूप में की। अपनी सोच के साथ उन्होंने ''उसे राजा बनाने के लिए पकड़ने'' की इच्छा की (यूहन्ना 6:15)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

पांच हज़ार को खिलाना (14:15-21)

कुछ अलोचनात्मक विद्वान दावा करते हैं कि पांच हज़ार को खिलाना और चार हज़ार को खिलाना एक ही कहानी के दो अलग-अलग विवरण हैं जिन्हें किसी तरह बिगाड़ दिया गया था। दोनों आश्चर्यकर्मों का ध्यान से अध्ययन करने पर यह बात गलत साबित हो जाएगी।

1. *अलग-अलग अवसर।* हम यह पक्का तो नहीं कह सकते कि दोनों आश्चर्यकर्मों के बीच में कितना अन्तर था, परन्तु निश्चय ही वे अलग-अलग अवसर थे। अपने चेलों को ''फरीसियों और सदूकियों के खमीर'' से सावधान रहने को कहने के समय यीशु ने साफ़ साफ़ उन दोनों घटनाओं को अलग किया (16:9, 10)।

2. *अलग-अलग स्थान।* पांच हज़ार को खिलाना बैतसैदा के निकट हुआ था (लूका 9:10) और इसमें गलील से आए अधिकतर यहूदी थे। चार हज़ार को खिलाना दिकापुलिस में हुआ था (मरकुस 7:31; 8:1-9)। उस इलाके में अन्यजातियों की आबादी अधिक थी इस कारण यह घटना सम्भवतया अधिकतर गैर यहूदियों के बीच में हुई।

3. *समय के अलग-अलग काल।* पांच हज़ार यीशु के साथ एक दिन रहे थे (14:15, 23), जबकि चार हज़ार उसके साथ तीन दिनों से थे (15:32)।

4. *भोजन की अलग-अलग मात्रा।* यीशु का पहला आश्चर्यकर्म जौ की पांच रोटियों और दो मछलियों के साथ था (यूहन्ना 6:9)। दूसरे आचर्यकर्म से पहले, सात रोटियां और कुछ छोटी मछलियां मिली थीं (15:34)। इसके अलावा सब के खा लेने के बाद बचे हुए भोजन की

मात्रा भी अलग-अलग मिलती है। पहले आश्चयर्कर्म के बाद, भोजन की बारह छोटी टोकरियां उठाई गई थीं (14:20); परन्तु दूसरे अश्चर्यकर्म के बाद, सात बड़े टोकरे इकट्ठे किए गए थे (15:37)।

मत्ती और मरकुस की पुस्तकें दोनों ही आश्चर्यकर्मों का वर्णन करती हैं। लेखकों को एक ही घटना दो बार लिखने की क्या आवश्यकता थी? वे पवित्र आत्मा की अगुआई में लिख रहे थे, इसलिए उन्होंने प्रत्येक आश्चर्यकर्म की सच्चाई को लिखा।

हम क्या करें? हम यीशु के पांच हज़ार को खिलाने से क्या सीख सकते हैं? चार अच्छे सबक ये हैं। (1) जो कुछ हमारे पास है हम उस का इस्तेमाल करेंगे। पांच रोटियां और मछलियां लोगों की भीड़ के लिए काफ़ी नहीं थी, परन्तु यीशु ने अपने सबसे प्रसिद्ध आश्चर्यकर्म करने के लिए इन छोटी-छोटी चीज़ों का इस्तेमाल किया। (2) हम जो कुछ हमारे पास है, उसे देने को तैयार रहें। अन्द्रियास चकित था कि इतने कम समय में इतने अधिक लोगों को कैसे खिलाया जा सकता है। परमेश्वर किसी भी आवश्यकता के लिए उपाय कर सकता है। जब हमें लगता है कि हमारे पास कुछ नहीं है तो परमेश्वर कुछ और योजना बना रहा हो सकता है! विश्वास अदृश्य को देखने और अविश्वसनीयता पर विश्वास करने और असम्भव को पाने के योग्य होना है। (3) हम अपने प्रभु की आज्ञाओं को तब भी मानें जब हमें उनकी समझ न हो। उपलब्ध भोजन की मात्रा पर विचार करें तो चेलों को यह अजीब लगा होना चाहिए था जब यीशु ने उन्हें लोगों से भूमि पर बैठ जाने के लिए कहने को कहा। जो बात असम्भव लगती है वह परमेश्वर के लिए सम्भव हो जाती है। (4) हमें अपनी आशिषों को बर्बाद नहीं करना चाहिए। बचे हुए सब टुकड़े इकट्ठे कर लिए गए थे। कुछ भी फैंका नहीं गया था। यदि प्रभु इसे सम्भालना आवश्यक समझता है तो क्या हमें भी नहीं चाहिए?

साधारण की महिमा (14:17)

परमेश्वर उन चीज़ों के इस्तेमाल से जो हमें साधारण लग सकती हैं अपनी बड़ी महिमा करवा सकता है। निर्गमन की पुस्तक में उस ने मूसा के हाथ में एक साधारण छड़ी का इस्तेमाल मिस्र पर विपत्तियां लाने और लाल समुद्र को दो भाग करने, अपने लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए किया (निर्गमन 4:1-3; 7:17; 8:5, 16; 9:23; 10:13; 14:16)। न्यायियों की पुस्तक में उस ने तीन सौ इस्राएलियों के हाथों में नरसिंगों, खाली घड़ों और मशालों का इस्तेमाल मिद्यानियों की सेना को हराने के लिए किया (न्यायियों 7:16, 22)।

सुसमाचार की पुस्तकों में यीशु ने एक जवान के साधारण खाने का इस्तेमाल एक बड़ी भीड़ को खिलाने के लिए किया (14:17; यूहन्ना 6:9)। आज हमारे पास क्या है जो साधारण लग सकता है, उस का इस्तेमाल उस की महिमा के लिए किया जा सकता है? क्या हम मसीह को इन चीज़ों का इस्तेमाल उसके नाम के लेने के लिए करने के लिए दे रहे हैं?

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.2.1; *वार्स* 2.9.1; 3.10.7; *लाइफ* 72. [2]राबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 142. [3]*बरूक ग्रंथ* 29.8. [4]यीशु के पांच हज़ार को खिलाने की पुराने नियम की समानताओं में परमेश्वर का एलिय्याह के लिए उपाय करना (1 राजाओं 17:9-16) और एलिशा का एक सौ लोगों को खिलाना शामिल है (2 राजाओं 4:42-44)। [5]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 375. [6]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 166. [7]मिशनाह *बेराकोथ* 6.1. [8]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट क्मैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 596. [9]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 246. [10]क्रेग एस. कीनर, *ए क्मैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 405; देखें प्लूटार्क *मोरेलिया* 279इ; 702डी-704बी.

[11]जुवेनल *सेटायर्स* 3.14; 6.542; देखें मिशनाह *सोटह* 2.1. [12]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जॉन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1971), 345, एन. 25.